Proceedings — Dr Nisha Yadav Geog

72

आज का युवा और स्वामी विवेकानन्द : विचार एवं मूल्य

डॉ॰ बॉबी यादव
असि. प्रो., हिन्दी
मा.कां.रा. महाविद्यालय
गाजियाबाद

निशा यादव
असि. प्रो., भूगोल
कु.मा.रा.म.स्ना. महाविद्यालय
बादलपुर

स्वामी विवेकानन्द आधुनिक भारत के उन चिंतकों में हैं जिन्होंने अपने विचारों के प्रकाश से युवा-वर्ग को सर्वाधिक बल दिया ताकि हमारे देश का भविष्य संस्कारों की पीठिका पर दैदिप्यमान हो। वे युवाओं के भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार के विकास के प्रबल समर्थक थे ताकि उनका नैतिक उत्थान भी हो सके। वे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अद्वैत की स्थापना पर बल देने और उसके परिपालन का संदेश देते हैं।

जिस समय स्वामी विवेकानन्द की मृत्यु हुई, उस समय वे 39 वर्ष के थे अतः हम कह सकते हैं कि वह युवावस्था में ही थे। स्वामीजी ने अपना संपूर्ण जीवन युवा के रूप में ही व्यतीत किया। उन्होंने अपने युवा मित्रों के साथ अनेक बार सार्थक विचार-विमर्श किया तथा उस समय के युवा-वर्ग को ध्यान में रखकर युवाओं को प्रेरित करने के लिए अपने मूल्यवान विचार प्रकट किए। ये विचार आज के संदर्भ में भी प्रासंगिक हैं। उनकी मृत्यु की एक शताब्दी से भी अधिक समय बीत जाने के बाद भी उन्हें पढ़ कर ऐसा लगता है कि वे आज के युवा को ही संबोधित कर रहे हैं। हमारा देश विश्व की सर्वाधिक युवा जनसंख्या वाले देशों में गिना जाता है। युवा ही किसी भी देश का भविष्य होते हैं तथा वे ही आगामी पीढ़ियों के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं परंतु आज हम देखते हैं कि भारतीय युवा-वर्ग का अधिसंख्य भटक गया प्रतीत होता है। लगता है कि जैसे भविष्य के प्रति उसकी कोई दृष्टि ही नहीं है।

ISBN : 978-93-80216-06-5

कहीं तो राजनीति ने उसे भटका रखा है, कहीं सिनेमा की चकाचौंध वाली दुनिया ने, और कहीं लगता है कि 'समय का सिर' पकड़ते-पकड़ते वह स्वयं 'गंजा' हो गया है। आज का युवा स्वयं को इस अरबों के महासागर में अकेला पाता है और अनेक बार नशाखोरी तथा गंदी आदतों में डूब जाता है, जिसका कोई अंत नहीं। वह स्वयं को पथभ्रष्ट पाता है तथा उन्हें रास्ता दिखाने का दावा करने वाले राजनेता, साधु-सन्यासी-बाबा लोग, धर्म तथा समाज के ठेकेदार मौका पाकर उसका शोषण करने से नहीं चूकते और वह स्वयं को टूटा हुआ, बिखरा हुआ महसूस करता है।

आज का युवा दो दिशाओं में जा रहा है। एक वर्ग तो वह है जो सूचना-प्रौद्योगिकी की राह पर चलकर आसमान की बुलंदियों की ओर बढ़ता जा रहा है, जिसके कदम रूकने का नाम नहीं लेते और वह लाखों-करोडों कमाता बेतहाशा रफ्तार से भागा जा रहा है, वह अपने मां-बाप, पत्नी-पुत्र, यार-दोस्त , सगे-संबंधी सब को पीछे छोड़कर बस भागा जा रहा है, अनंत आकाश की सरहदों को छूने, जिसका कोई अंत नहीं है।

वहीं दूसरी तरफ दूसरा वर्ग है जो हमारे गाँवों, कस्बों, छोटे शहरों, दूर-दराज में रहता है, जिसके पास आज भी बिजली-पानी-कपडा-मकान की समस्या है, वह बेरोजगारी-मंहगाई-गफलत-संत्रस से पीड़ित होकर स्वयं से बेजार होता जा रहा है। स्वामी जी ने ऐसे युवाओं को ही प्रेरणा देने का काम किया है। वे चाहते हैं कि हमारे देश के युवा प्रबुद्ध नागरिक बनकर उभरें तथा उनके लिए उत्तम आदर्श स्थापित किए जाएं। वे चाहते हैं कि युवा देश के उत्थान में अपना सर्वस्व योगदान करें तथा देश को प्रगति की ओर अग्रसर करें और यहां से बेरोजगारी, जहालत, बीमारी, असमानता आदि समस्याओं का निराकरण करने में महत्ती भूमिका निभाएं तथा देश की परिस्थितियों में परिवर्तन को अपना दायित्व समझें और उसमें सकारात्मक परिवर्तन का प्रयास करें।

ISBN : 978-93-80216-06-5